2

प्रकृति चित्रण
(Nature Study)

2.0 भूमिका

जब से इस धरती पर मानव ने जन्म लिया है, उसका और प्रकृति का साथ रहा है। प्रकृति के सुंदर रूप को देखकर मानव ने हमेशा उसका चित्र बनाना चाहा है। इस पाठ द्वारा हम आपको ऐसा ही एक निमंत्रण देने वाले हैं कि आप घंटों प्रकृति चित्रण में समय बिताएं।

आप किसी भी प्राकृतिक वस्तु जैसे पेड़–पौधे, फूल–पत्ती, फल–सब्जी आदि को देखते हैं, तो आपको उसमें उसका रंग, आकार, रेखा तथा बनावट (Texture) दिखाई देती है। इन्हीं सबको ध्यान में रख कर हम प्रकृति–निरीक्षण तथा चित्रण करते हैं।

जिस प्रकार हमारा शरीर आंख, नाक, कान, हाथ–पांव आदि अंगों से मिलकर बना है, उसी प्रकार प्रत्येक चित्र मुख्यतः रेखा, रंग, रूप, तान, बनावट और अंतराल जैसे अंगों से मिलकर बना है। इन अंगों को बनाने के लिए प्रकृति ने नाप, संतुलन, अनुपात, संयोजन आदि नियमों का सहारा लिया है। जैसे दोनों हाथ और पांव बराबर माप के हैं। दो आंखों के बीच बराबर की दूरी होती है। पेट की नाभि की सीध में हाथ की कोहनी होती है। यदि हमारे दोनों हाथ या पांव बराबर न होते तो हम असंतुलित हो जाते। यदि एक आंख दूसरी आंख से उंची या नीची बनी होती तो हम अनाकर्षक लगते।

2.1 उद्देश्य

इस पाठ का जब आप अध्ययन तथा अभ्यास कर लेंगे तो इस योग्य हो जाएंगे कि–

- विभिन्न प्राकृतिक वस्तुओं का सही अनुपात, सन्तुलन तथा छन्द का आपेक्षिक अन्तर समझा सकेंगे।
- पेड़ पौधे फल आदि प्राकृतिक आकारों का चित्रण कर सकेंगे।
- प्राकृतिक वस्तुओं का वर्ण पहचान सकेंगे।
- सब्जी, फल आदि तथा सजीव प्राणियों का रेखांकन तथा चित्रण कर सकेंगे।

2.2 परिदृष्टि (Perspective)

चित्र बनाते हुए सबसे पहले परिदृष्टि (परस्पेक्टिव) के नियम का ध्यान रखें। परस्पेक्टिव का अर्थ है "पास की वस्तु बड़ी और स्पष्ट दिखाई देती है, जबकि वही वस्तु दूर होने पर छोटी और धुंधली दिखाई देती है।" यहाँ यह स्पष्ट कर दें कि वास्तव में वह वस्तु छोटी–बड़ी होती नहीं है। बल्कि चित्रकला में जो भी वस्तु जैसी दिखाई देती है, हम उसे वैसा ही बनाते हैं। इस प्रकार "परस्पेक्टिव" एक महत्वपूर्ण नियम है।

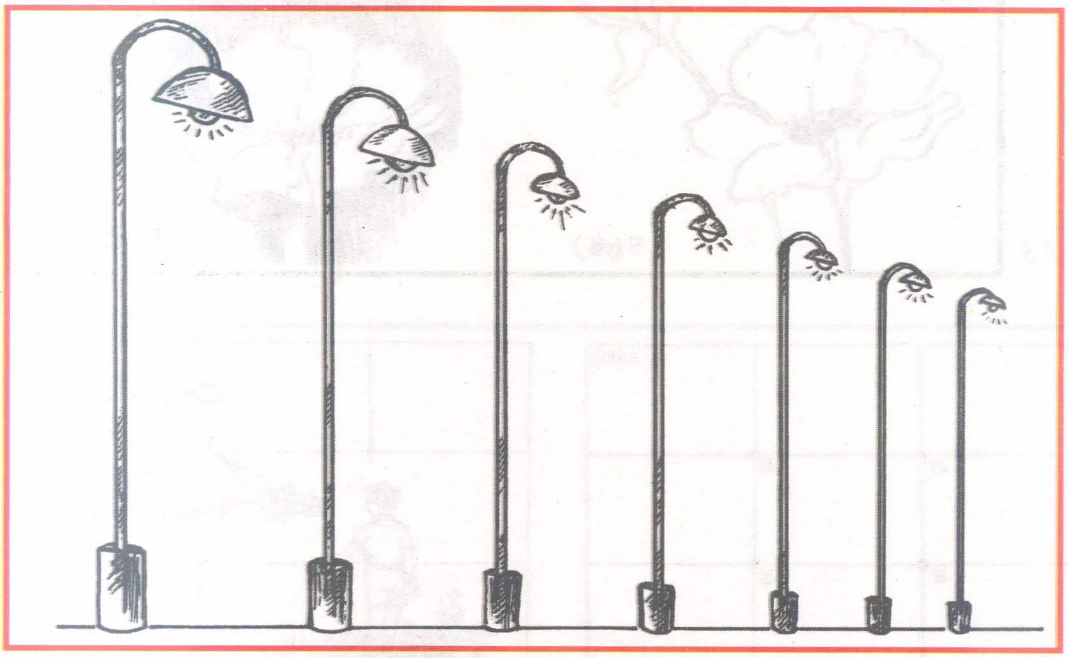

चित्र 2.1

2.3 संतुलन (Balance)

चित्रकला का अन्य नियम है –"संतुलन"। प्रभावशाली एवं अच्छे संयोजन से ही संतुलन उत्पन्न होता है। (चित्र 2.2)

अपनी दोनों आँखों के बीच की दूरी नापो। क्या वह दूरी एक आंख के बराबर है? क्या हाथ की कोहनी की सीध में पेट की नाभि है? क्या आपके हाथ और चेहरे की लम्बाई बराबर है?

चित्र 2.2

इस प्रकार जब हम कोई चित्र बनाते हैं तो हमें कुछ नियमों जैसे दृष्टिक्रम, संतुलन, अनुपात, संयोजन, लय आदि का ध्यान रखना चाहिये। इन नियमों को अपनाने से चित्र सुन्दर और आर्कषक बनता है।

कभी कभी पृष्ठ भूमि को देख कर चित्र की सही पहचान करते है। चित्र (2.3) में पृष्ठभूमि में काले ट्रीटमेंट के कारण फूल में अधिक आयतन और गहराई आ गई है।

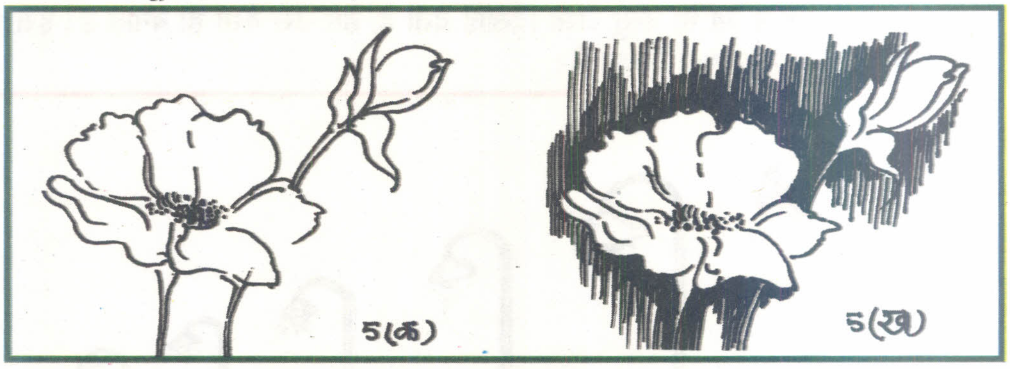

चित्र 2.3

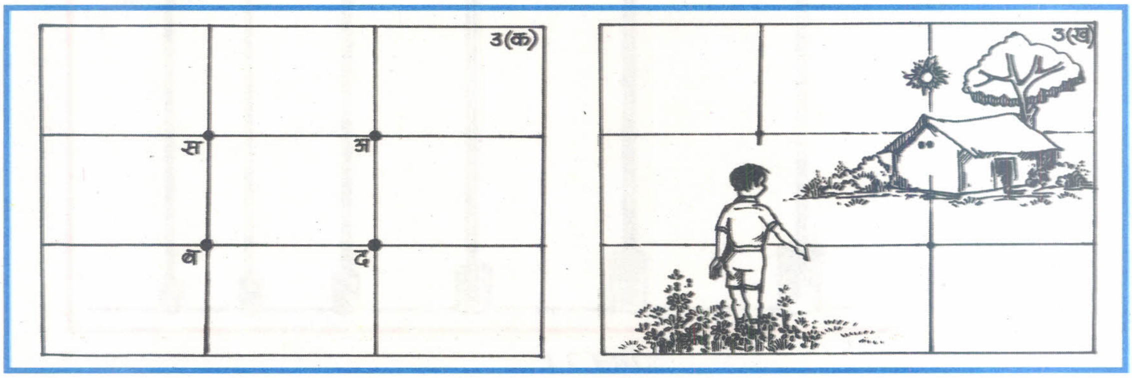

चित्र 2.4

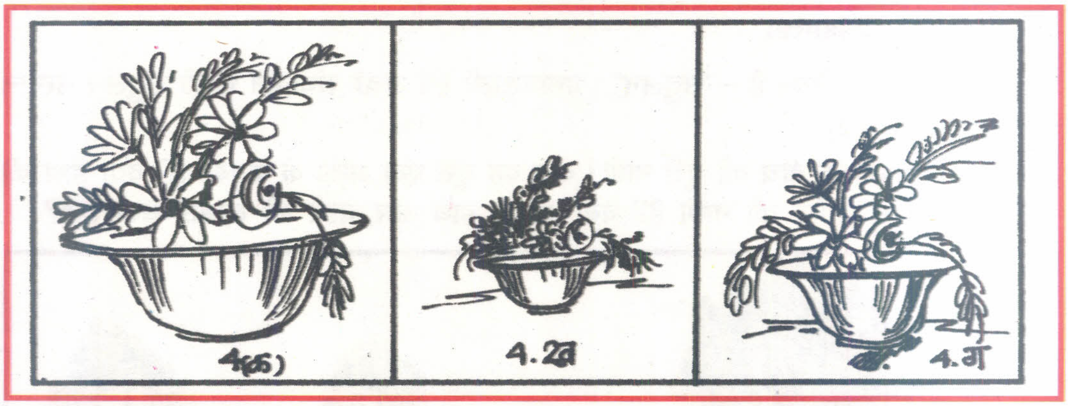

चित्र 2.5

आप चित्र 4 (क) को देखें तो आप अनुभव करेंगे कि फूलदान कागज के माप के अनुपात में बहुत बड़ा है। चित्र 4 (ख) में फूलदान का चित्रांकन बहुत छोटा है। इसी कारण दोनों चित्र असंतुलित हो गए हैं और यह एक अच्छा संयोजन नहीं माना जाएगा। चित्र 4 (ग) में संतुलित चित्रण हुआ है। (चित्र 2.5)

प्रकृति चित्रण या अन्य किसी भी चित्रण को संतुलित बनाने में पृष्ठभूमि और आधार–रेखा का बहुत महत्व है। जैसे चित्र 2.5 (क) में आधार–रेखा के अभाव में फूलदान हवा में लटका दिखाई दे रहा है। चित्र (ख) को देखकर ही आप समझ जाएंगे कि पृष्ठभूमि के अभाव में फूल अधिक आकर्षित नहीं कर रहे हैं जितना पृष्ठभूमि बनने के बाद आकर्षित कर रहे हैं। चित्र (ग)

2.4 प्रकृति चित्रण की तैयारी

प्रकृति चित्रण करने से पहले आवश्यक सामग्री पहले जुटा लें, जैसे कागज, ब्रुश, पेंसिल, रंग, घोलने के लिए कोई भी समतल चिकनी प्लेट, बोर्ड, रंगीन पेंसिल, मोमी रंग या जल रंग या जिस भी माध्यम से आप चित्रण करना चाहें।

सबसे पहले हमारे सामने प्रश्न आता है कि प्रकृति चित्रण के लिए किस प्रकार की रेखाएं खींचें। प्रकृति चित्रण करने से पूर्व यदि विभिन्न प्रकार की रेखाओं का अभ्यास पहले पेंसिल से और बाद में ब्रुश से करें तो कार्य के प्रति हमारे अंदर आत्मविश्वास पैदा होता है। साथ ही विषय के प्रति मन में स्पष्ट विचार पैदा हो जाता है कि हम क्या बनाने जा रहे हैं। पेंसिल, ब्रुश, या मोमी रंग से 'रेखा अभ्यास' को किसी भी चित्रांकन के लिए रीढ़ की हड्डी समझो।

प्रारम्भ में अभ्यास के लिए पेंसिल एवं रंगीन पेंसिल से प्रकृति चित्रण करना ठीक रहता है क्योंकि आवश्यकता पड़ने पर उसको मिटा कर ठीक कर सकते हैं। प्रकृति चित्रण का जितना आप विस्तृत (detailed) रूप दिखाना चाहें तो कागज उतना ही समतल होना चाहिए। चारकोल या पेंसिल के प्रयोग से मोटाई और गहराई सरलता से दिखा सकते हैं।

2.5 रेखा

आप अपने मन में यह पक्का निश्चय कर लें कि पेंसिल से चित्रांकन सदा हल्के हाथों से ही करना है। हम अक्सर उत्सुकता में आकर पेंसिल कस कर पकड़ लेते हैं जिसका नतीजा होता है कि कागज पर निशान पड़ जाता है। उसको मिटाने के बाद जब रंग करते हैं तो कागज की सतह खराब हो जाती है। अच्छा रहता है कि अंगूठे और हाथ की पहली दो उंगुलियों के बीच पेंसिल को पकड़ कर कलाई एवं उंगलियों के जोड़ को घुमाते हुए चित्रांकन करें।

अब हमें कुछ आगे बढ़ना है। हमको रेखा के अभ्यास के साथ तान का अभ्यास करना है अर्थात रंग का हल्का–हल्का और गहरा गुण 'तान' की ओर संकेत करता है। वस्तु पर छाया – प्रकाश का आविर्भाव दिखाना *'तान'* कहलाता है।

कोई भी वस्तु दूसरी वस्तु की तुलना में कितनी गहरी रंगत या हल्की रंगत वाली दिखाई दे रही है, इस गुण को दिखाना चित्र का एक विशेष अंग बन जाता है। *तान* हमको यह भी बताता है कि कौन–सी वस्तु चित्र में सबसे दूर है या सबसे करीब है या दूरी के हिसाब से दोनों के बीच में स्थित है।

सबसे पहले *तान* के अभ्यास के लिए किसी भी कागज पर पेंसिल से बराबर का दबाव बनाए रख कर हल्के से हल्के *तान* में रंगे। फिर पेंसिल पर थोड़ा अधिक दबाब देकर और गहरे *तान* में रंगे। ऐसा करते हुए एक बात का ध्यान रखना है कि हमें विभिन्न *तान* प्राप्त करनी है। *तान* तथा छाया–प्रकाश का अंकन करने के लिए पेंसिल की नोक का नहीं, सतह का प्रयोग करते हैं। अभी हमने पेंसिल द्वारा विभिन्न *तानों* का अभ्यास किया है। ऐसा हम रंगों द्वारा भी कर सकते हैं।

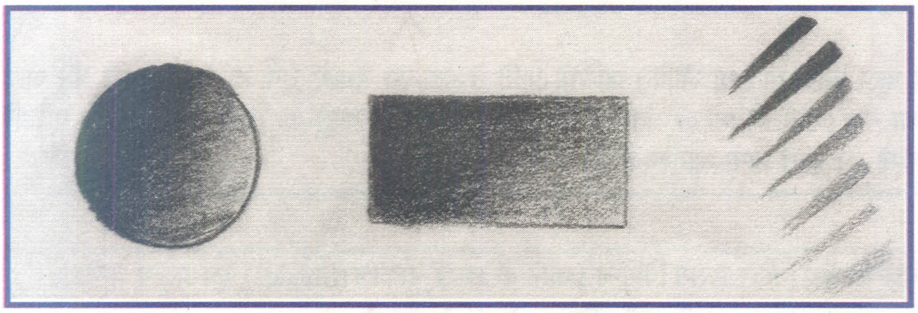

चित्र 2.6

देखो, करो और समझो

चित्र (2.6) में जैसा अलग–अलग *तान* को दिखाया गया है वैसा ही आप सामने के हिस्सों में भरने का अभ्यास करें।

चित्र 2.7

2.6 रंग

अब हम रंग भरने पर आते हैं। रंग भरने से पहले आप एक बात मन में रख लें कि आपको रंगों से खेलना है और अपनी कल्पनाशक्ति को बढ़ाना है। इसका अभिप्राय यह है कि जैसे हम जानते हैं कि पेड़–पौधे, घास–सब्जी और यहां तक कि पत्तियां भी, सभी हरे रंग की होती हैं और हमें इसलिए उनको सीधा हरे रंग से ही बना देना है। ऐसा हम सोचते हैं और हरा रंग लिया और भर देते हैं किंतु यहां हमको ठीक ऐसा नहीं करना है, बल्कि हमको हरे रंग में कभी कम या ज्यादा पीला मिलाना है, कभी भूरा मिलाना है, तो कभी नीला। कभी–कभी हरे रंग में थोड़ा–सा लाल रंग मिलाओ। इस प्रकार आपको हरे रंग की अनेक रंगत प्राप्त होगी।

जल रंग लगाने के अनेक तरीके हैं, जैसे–

- जहां रंग करना हो वहां पानी से गीला कर लो, फिर सूखने से पहले रंग भर लो। रंग को अपने आप फैलने दो।
- पहले हल्के रंग भर लो और फिर क्रमशः मध्यम, गहराई वाले रंगों से प्रयोग करें।

याद रखें, जल रंग पारदर्शी होते हैं, जिनको लगाने के बाद भी कागज की सतह का आभास होता है। पोस्टर रंग जल रंगों की तरह पारदर्शी नहीं होते हैं। पोस्टर रंग ऐसे होते हैं कि एक रंग के सूख जाने के बाद हम उस पर दूसरा रंग (चाहे वह हल्का रंग ही क्यों न हो) लगा सकते हैं। सबसे चमकदार हिस्सा दिखाने के लिए हम अंत में सफेद रंग को भी लगा सकते हैं। इसी कारण पोस्टर रंगों से चित्र बनाना सरल लगता है। जबकि जल रंगों में ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि एक रंग लगाते ही उस पर दूसरा रंग लगा दें तो उसकी पारदर्शिता समाप्त हो जाएगी।

अंत में हम आपसे यह कहना चाहेंगे कि चित्र बनाते हुए या उसे पूरा करने के बाद आप कुछ प्रश्न अपने आपसे अवश्य करें जिससे आप अपने कार्य का मूल्यांकन स्वयं कर सकेंगे। वे प्रश्न इस प्रकार हो सकते हैं, जैसे–

- क्या आप में इतना उत्साह भर गया है कि पहली कोशिश में यदि चित्र अच्छा नहीं बन सका तो दूसरे कागज पर फिर से वही चित्र बनाना शुरू कर सकेंगे ?
- क्या चित्र का संयोजन प्रभावशाली तथा संतुलित बना है ?
- क्या आप इतने मोटे ब्रुश का प्रयोग कर रहे हो कि अपना कार्य स्वतंत्रतापूर्वक कर पा रहे हो ?
- क्या पेंसिल पर आपकी पकड़ ज्यादा कसी हुई तो नहीं है ?
- क्या आप चित्र बनाते हुए कभी–कभी आधी मूंदी आंखों से उसे देखते हो जिससे चित्र के आवश्यक भाग स्पष्ट दिखाई दें ?

इस प्रकार आपने समझा कि दूसरों की अनुभव की गई या सीखी हुई बातों को सुन कर या पढ़ कर और अपने अभ्यास, विचारों, प्रयोग और उत्साह से कार्य करने से हम अधिक सीखते हैं। कलाकारों की कलाकृतियों का अभ्यास करके भी हम प्रकृति चित्रण की कला शैली को समझ सकते हैं।

2.7 सारांश

प्रकृति की सभी वस्तुओं जैसे पेड़–पौधे, फूल, सब्जियां तथा जीवित प्राणियों आदि में आप रंग, रेखाएं, बनावट आदि पाएंगे और साथ ही यह भी देखेंगे कि वे सही अनुपात, संतुलन तथा नाप आदि नियमों के अंतर्गत हैं। इसलिए किसी भी वस्तु का ड्राइंग बनाते समय परिदृष्टि, अनुपात, संतुलन, रंग–संयोजन, नाप आदि नियमों का ज्ञान होना आवश्यक है।

2.8 माडल प्रश्न

1. रेखाओं द्वारा किसी फल का चित्र बनाइए। फिर इसमें विभिन्न प्रकार के छाया–प्रकाश (Shades) का प्रयोग करें।
2. विभिन्न रंगों के फूलों के साथ एक फूलदान सामने रखें। फिर इसे धुंधले रंग से रंगे।
3. इसी प्रकार के अन्य मॉडल को पानी के रंगों से पारदर्शी तकनीक से रंगें।
4. घर से बाहर पेड़–पौधों वाले किसी भी स्थान को चुनें। फिर अपने ड्राइंग में संतुलन और अनुपात का सहारा लेने की कोशिश करें।

अभ्यास सूची

1. बाहर एवं मनपसंद जगह पर बैठ कर फूलों का अध्ययन करके चित्रण कीजिए।
2. विभिन्न प्रकार के पेड़ों के अध्ययन के पश्चात् ध्यान से चित्रांकन कीजिए। अंकन में ज्यामितिक आकारों का प्रयोग कीजिए तथा उपयुक्त शेडिंग अर्थात् छाया का प्रयोग कीजिए।

चित्रकार : कॅन्स्टेबल

चित्रकार : मैनेट

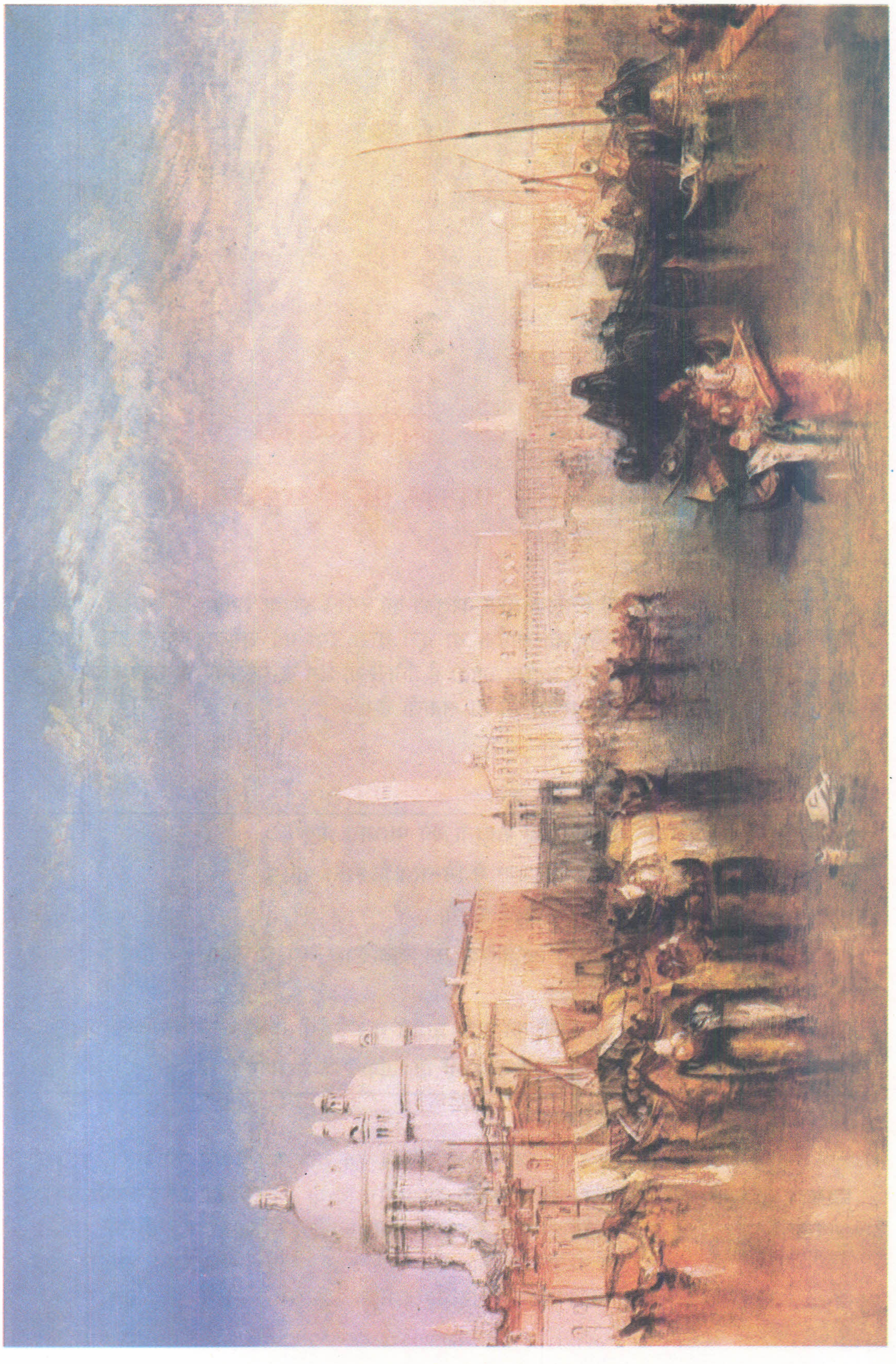

चित्रकार : टारनर